चन्दूलाल चन्द्राकर शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय धमतरी

प्लेटो

(जीवनी व प्रमुख सिद्धांत)

शासकीय चंदूलाल चंद्राकर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय धमधा,
जिला— दुर्ग (छत्तीसगढ़)

MA (राजनीति विज्ञान) 4th Semester, 2021-2022

प्लेटो

शोधकर्ता— सुषमा सेन
राजनीति विज्ञान— MA 4th Semester

The Great Greek Philosophers

Plato

Aristotle

Socrates

निर्देशिका — रजनी सोनवानी
विभागाध्यक्ष– राजनीति विज्ञान

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **सुषमा सेन** ने **शासकीय चंदूलाल चंद्राकर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय धमधा, जिला— दुर्ग (छत्तीसगढ़)** में नियमित छात्रा के रूप में 2021-22 के MA **चतुर्थ सेमेस्टर राजनीति विज्ञान** में अंशपूर्ति के लिए महान दार्शनिक **' प्लेटो '** के सिद्धांतों के विषय में प्रोजेक्ट रिपोर्ट मेरे निर्देशन एवं बाल मार्गदर्शन में पूर्ण किया। यह प्रतिवेदन इनकी पुरस्तकीय तथा शैक्षणिक तथ्यों पे आधारित है।

शोधकर्ता— सुषमा सेन
राजनीति विज्ञान MA 4th Semester

निर्देशिका — रजनी सोनवानी
विभागाध्यक्ष— राजनीति विज्ञान

आभार प्रदर्शन

जब हम किसी कार्य को करते है तो उसमें सफल होने की हमारी आकांक्षा होती है और यदि आपको सही मार्गदर्शक इस कार्य हेतु मिल जाए तो यह सोने पर सुहागा होता है क्योंकि हम इस कार्य में आने वाले कठिनाइयों से अनभिज्ञ रहते हैं इस परिस्थिति में हमें एक बेहतर मार्गदर्शक की आवश्यकता होती है। परम आदरणीय एवं स्नेह के रूप मेरे मार्गदर्शनकर्ता **डॉ. रजनी सोनवानी जी** (**विभागाध्यक्ष- राजनीति विज्ञान**) **शासकीय चंदूलाल चंद्राकर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय धमधा , जिला— दुर्ग** (**छत्तीसगढ़**) हृदय से कृतज्ञ रहूंगी। उनकी विषय के प्रति गहन ज्ञान तथा मार्गदर्शन के आधार पर मैं अपने इस प्रॉजेक्ट को सकुशल रूप से पूर्ण कर पायी साथ ही **महाविधालय परिसर धमधा के प्राचार्य और सभी प्राध्यापक गणों** का आभारी हू जिन्होंने मेरा हर जगह मार्गदर्शन किया विशेष तौर से **डॉ. देवश्री भोयर जी** (Asst. **प्रो. राजनीति विज्ञान**) का भी आभारी हू।

मेरे सबसे बड़े प्रेरणा स्त्रोत मेरे **माता- पिता** के आशीर्वाद के फलस्वरूप मैं ये प्रॉजेक्ट पूर्ण करने में सक्षम हो पायी। मैं उनका हमेशा ही ऋणी रहूंगी।

शोधकर्ता— सुषमा सेन
राजनीति विज्ञान— MA 4th Semester

निर्देशिका — रजनी सोनवानी
(विभागाध्यक्ष— राजनीति विज्ञान)

प्लेटो, जन्म— 428/427 ईसा पूर्व, एथेंस, ग्रीस मृत्यु— 348/347, एथेंस, प्राचीन यूनानी दार्शनिक, के छात्र 470–399 ईसा पूर्व के शिक्षक 384–322 ईसा पूर्व और अकादमी के संस्थापक, अद्वितीय प्रभाव के दार्शनिक कार्यों के लेखक के रूप में जाने जाते हैं।

प्लेटो

रूपरेखा —

(अ) परिचय प्रस्तावना
(ब) जीवन परिचय
(स) प्लेटो का प्रमुख सिद्धांत अवधारणा—

(द) निष्कर्ष
(न) संदर्भित ग्रंथ

(1) परिचय/प्रस्तावना —

प्राचीन यूनान के महान दार्शनिक प्लेटो को केवल यूनान का ही नहीं बल्कि समूचे विश्व का प्रथम राजनीतिक दार्शनिक होने का श्रेय प्राप्त हैं। उनसे पहले किसी ने भी राज्य, सरकार तथा व्यक्ति के संबंध पर तर्कसंगत सिद्धांत प्रस्तुत नहीं किया। प्लेटो का दर्शन सर्वव्यापी था। मूल रूप में प्लेटो एक आदर्शवादी था। वह **पदार्थ**(Matter) की अपेक्षा **विचार**(Idea) को ही वास्तविक मानकर प्राथमिकता देते थे। प्लेटो की मान्यता हीगेल, ग्रीन, बोसांके जैसे आधुनिक आदर्शवादियों का प्रेरणा-स्त्रोत बनी। आधुनिक युग की बहुत सी विचारधाराएं— **फासीवाद, अधिनायकवाद, नाजीवाद** भी प्लेटों की ऋणी है।

(2) जीवन परिचय —

महान यूनानी दार्शनिक प्लेटो का जन्म 427 ईसा पूर्व में एथेंस के एक कुलीन परिवार में हुआ था। उनके पिता '**अरिस्टोन**' एथेंस के अंतिम राजा को कोर्डस के वंशज तथा माता '**पेरिकतिओन**' यूनान के सोलन घराने से थी। **प्लेटो** का वास्तविक नाम '**एरिस्तोकलीज**' था। लेकिन उसके अच्छे स्वास्थ्य के कारण उसके व्यायाम शिक्षक ने इसका नाम प्लाटोन रख दिया। प्लेटो शब्द का यूनानी उच्चारण 'प्लाटोन' है तथा प्लाटोन शब्द का अर्थ चौड़ा-चपटा होता है। धीरे-धीरे प्लाटोन के स्थान पर प्लेटो कहा जाने लगा। इस तरह 'एरिस्टोकलीज' प्लेटो बन गया। अतः राजनीतिक चिंतन के जगत में वह आज इसी नाम से जाने-पहचानने जाते हैं। वह प्रारंभ से ही राजनीतिज्ञ बनना चाहते थे लेकिन उसका यह स्वप्न पूरा न हो सका और यह एक महान दार्शनिक बन गया। वह 18 से 20 वर्ष की आयु में सुकरात की ओर आकर्षित हुआ। प्लेटो को प्रारंभिक शिक्षा के पश्चात 20 वर्ष की अवस्था में सुकरात के विद्यालय में भेज दिया गया। जहां 8 वर्ष तक सुकरात के चरणों में बैठकर उसने ज्ञान अर्जित किया। यद्यपि प्लेटो तथा सुकरात में कुछ विभिन्नताएं थी किंतु सुकरात की शिक्षाओं ने प्लेटो को अधिक आकर्षित किया। प्लेटो सुकरात का शिष्य बन गया। सुकरात के विचारों से प्रेरित होकर ही प्लेटो ने राजनीति की नैतिक व्याख्या की , सद्गुण को ज्ञान माना , शासन कला को उच्चतम कला की संज्ञा दी और विवेक पर बल दिया। 399 ईसा पूर्व में सुकरात को मृत्यु दंड दिया गया उस समय प्लेटो की उम्र 28 वर्ष थी। इस घटना से प्लेटो के जीवन पर ऐसा प्रभाव/आघात लगा कि उन्होंने अपनी सारी योजनाओं को परिवर्तित कर दिया और वह राजनीति से विरक्त होकर दार्शनिक जीवन को अपनाया और वो एक दार्शनिक बन गए। सुकरात की मृत्यु के बाद प्लेटो एथेंस में अधिक दिनों तक नहीं रह सके उन्होंने सर्वोत्तम शासन प्रणाली की खोज में अगले 12 वर्षों तक मिस्त्र , इटली , यूनान के नगरों का भ्रमण करते रहे। वह पाइथागोरस सिद्धांतों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए 387 ईसा पूर्व इटली और सिसली गए। जहां उनकी भेंट सिसली के राज्य सिराक्यूज में दियोन तथा वहां के राजा डायोनिसियस प्रथम से हुई। प्लेटो और डायोनिसियस से कुछ बातों पर मतभेद हो गया और उसे दास के रूप में **इजारन टापू** भेज दिया गया। प्लेटो को उसके एक मित्र ने वापस एथेंस पहुंचाने में उसकी मदद की।इजारन टापू से वापस लौटकर उन्होंने 386 ईसा पूर्व में अपने शिष्यों की मदद से एथेंस में एक शिक्षण संस्था खोला। यह **प्लेटो की प्रसिद्ध अकादमी या शिक्षण संस्था** थी जिसे **यूरोप का प्रथम विश्वविद्यालय** होने का गौरव प्राप्त है। प्लेटो ने अपने जीवन के 49 वर्ष एक दार्शनिक और अध्ययन, अध्यापन कार्य के रूप में यही व्यतीत किए। इस

" गणित के ज्ञान के बिना यहां कोई प्रवेश करने का अधिकारी नहीं है। "

(Let no man ignorant of geometry enter here)

367 ईसा पूर्व में सिराक्यूज के राजा डायोनिसियस प्रथम की मृत्यु हुई और उसका पुत्र डियोनियस द्वितीय राजगद्दी पर बैठा। दियोन ने डियोनियस द्वितीय के दार्शनिक शासक के प्रशिक्षण के लिए प्लेटो को सिराक्यूज आने का आमंत्रण दिया। इस हेतु प्लेटो ने वहां की यात्रा की लेकिन उसका प्रयास विफल रहा क्योंकि तरुण शासक डियोनिसियस द्वितीय अपनी स्वेच्छाचारी मानसिकता से वह कठोर प्रशिक्षण लेने हेतु उपयुक्त सिद्ध नहीं हुआ जो दार्शनिक शासक बनने हेतु आवश्यक था। अतः प्लेटो कई तरह की परेशानियों झेलते हुए विफल होकर वहां से एथेंस लौट आए। अपने शिष्य के विवाह समारोह में शामिल हुए और वही सोते समय 81 वर्ष की अवस्था में उनकी मृत्यु हो गई। इस तरह 347 ईसा पूर्व में दार्शनिकों का राजा और राजाओं को दार्शनिक बनाने वाला आदर्शवादी दार्शनिक स्वयं मृत्यु की गोद में सो गये।

प्लेटो के प्रमुख ग्रंथ, महत्वपूर्ण रचनाएं तथा शैली — राजदर्शन की दृष्टि से प्लेटो ने मुख्य रूप से तीन ग्रंथों की रचना की है जो निम्नलिखित हैं —

1. **रिपब्लिक**(the republic)
2. **स्टेट्समैन**(the statesman)
3. **लॉज**(the laws)

प्लेटो की रचनाओं को काल के आधार पर चार भागों में बांटा जा सकता है—

1. **प्रथम वर्ग** में सुकरात से संबंधित रचनाएं हैं। इन रचनाओं के विचार सुकरात के विचारों की ही अभिव्यक्ति है। यह रचनाएं हैं—**एपोलॉजी**(apology), **क्रीटो**(crito), **यूथीफो**(euthyphro), **जोर्जियस** (gorgias) आदि।

2. **द्वितीय वर्ग** की रचनाएं 380 ईसा पूर्व की हैं। ये प्लेटो के अपने विचारों से संबंधित हैं। इस वर्ग में— **मीनो**(meno), **प्रोतागोरस**(protagoras), **सिम्पोजियम** (symposium), **फेडो** (phaedo), **रिपब्लिक**(republic), **और फेड्रस**(phaedras) आदि हैं।

3. **तृतीय वर्ग** में संवाद या कथोपकथन आते हैं जिनका संबंध प्लेटो की शैली विचार और व्यक्तित्व में अधिक द्वंद्वात्मक पद्धति से हैं। **पार्मीनीडिट, थीटिट्स, सोफिस्ट, स्टेट्समैन** आदि।

4. **चतुर्थ वर्ग** में **फिलिप्स, टायमीयस, लॉज** आदि ग्रंथ आते हैं। **लॉज प्लेटो का अंतिम ग्रंथ है।** इन रचनाओं में प्लेटो की सर्वोत्तम रचना **रिपब्लिक** है। इसमें उसकी नाटकीय शैली, कवित्व और कल्पना की उड़ान का अपूर्व रूप देखने को मिलता है। इसे गणराज्य और न्याय का दोहरा शीर्षक प्राप्त है। इसमें **समाजशास्त्रीय, आध्यात्मिक** और **शैक्षणिक** सभी समस्याओं की विवेचना की गई हैं। यह तो एक प्रकार से संपूर्ण मानव जीवन का दर्शन है।प्लेटो **राजनीति, दर्शन, शिक्षा, मनोविज्ञान, कला, नीतिशास्त्र** आदि के क्षेत्र में एक मेधावी व सर्वश्रेष्ठ विचारक के रूप में प्रतिष्ठित हुआ। यह रचना राजनीतिक चिंतन के इतिहास में प्लेटो की एक बहुत ही महत्वपूर्ण व अमूल्य देन मानी जाती है।

प्लेटो का प्रमुख सिद्धांत/अवधारणा—

(1) **प्लेटो की न्याय संबंधी अवधारणा/न्याय का सिद्धांत**

(2) **प्लेटो की शिक्षा व्यवस्था**

(3) **आदर्श की अवधारणा**

(4) **साम्यवाद का सिद्धांत**

(1) न्याय का सिद्धांत—

प्लेटो का न्याय सिद्धांत उसके दर्शन की आधारशिला है। प्लेटो की मुख्य ग्रंथ **रिपब्लिक** का मुख्य विषय न्याय का अनुसंधान करना है। जो उसके द्वारा प्रतिपादित आदर्श राज्य का मुख्य आधार है तथा जो कार्य रूप में परिणत होकर उसे आदर्श रूप प्रदान करता है। न्याय के इस रूप का अनुसंधान होने के कारण रिपब्लिक का दूसरा नाम न्याय से संबंधित भी है। रिपब्लिक का प्रारंभ और अंत न्याय की चर्चा से होता है। प्लेटो ने न्याय को कितना महत्व दिया है वह इस बात से ही स्पष्ट हो जाता है की प्लेटों **रिपब्लिक** को न्याय विषयक ग्रंथ कहता है। आदर्श राज्य में न्याय व्यवस्था की स्थापना के लिए ही दर्शन का शासन, राज्य नियंत्रित शिक्षा व्यवस्था तथा साम्यवादी व्यवस्था का प्रावधान किया है। प्लेटो के अनुसार समाज में प्रत्येक व्यक्ति को अपनी प्रकृति और प्रशिक्षण के अनुकूल अपने कार्य कुशलतापूर्वक करने चाहिए और दूसरों की कार्य में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। प्लेटो तत्कालिक राज्यों की बुराइयों से बहुत चिंतित था। सोफिस्टो के प्रचार के परिणाम स्वरुप यूनानी नगर राज्यों के लोग बहुत ही स्वार्थी और व्यक्तिवादी बन गए थे। उनमें नैतिक मूल्यों का पतन हो चुका था, इन बुराइयों को दूर करने के लिए और राज्य में एकता तथा सामाजिक भ्रांत–भाव लाने के लिए प्लेटो ने न्याय सिद्धांत का प्रतिपादन करता है। प्लेटो न्याय के लिए **डिकायोस्यून** शब्द का प्रयोग किया है जिसका अर्थ है **कसर्निंग** जस्टिस अर्थात् न्याय से संबंधित यही प्लेटो के न्याय सिद्धांत का आधार है। प्लेटो द्वारा प्रतिपादित न्याय सिद्धांत आधुनिक युग में प्रचलित न्याय की अवधारणा से पूर्णतः भिन्न है। वह वर्तमान समय विधि के आवरण में लिपटा हुआ नहीं है और ना ही उसका पर्यायवाची है। प्लेटो का न्याय सिद्धांत समझने के लिए इसका आधुनिक अर्थ जानना आवश्यक है। वर्तमान समय में न्याय शब्द का प्रयोग कानून के आधार पर न्यायाधीश द्वारा दिए गए निर्णय के लिए किया जाता है। किन्तु प्लेटो ने न्याय शब्द का प्रयोग वैधानिक अर्थ में नहीं वरन् नैतिक अर्थ में किया है। उसके द्वारा **न्याय** शब्द लौकिक धर्म की पर्यायवाची अर्थ में किया गया है। इसका अर्थ केवल यह है कि मनुष्य अपने उन सभी कर्तव्यों का पालन करें जिनका पालन समाज की व्यवस्था और हित की दृष्टि से किया जाना आवश्यक है। प्लेटो का कहना है कि समाज अथवा राज्य, समाज की आवश्यकता और व्यक्ति की योग्यता को दृष्टि में रखते हुए प्रत्येक व्यक्ति के लिए कुछ कर्तव्य निश्चित करते हैं और प्रत्येक व्यक्ति द्वारा संतोषपूर्वक अपने– अपने कर्तव्यों का पालन करना ही न्याय हैं। न्याय की इस धारणा के संबंध में **अरस्तू** ने कहा है कि– **न्याय व संपूर्ण सदगुण है जो हम एक–दूसरे के साथ अपने व्यवहार प्रदर्शित करते हैं।** प्लेटो ने न्याय संबधित अपनी धारणा का प्रतिपादन करने से पूर्व तत्कालीन समय में प्रचलित न्याय सम्बन्धित धारणाओं का विवेचन किया और खंडन किया है।

तत्कालीन समय में इस प्रकार की निम्नलिखित धारणाएं प्रचलित थी —

(अ) परंपरावादी अवधारणा—

सर्वप्रथम प्लेटो ने न्याय की परंपरागत धारणा का विश्लेषण किया **सिफालस** जो कि परंपरागत नैतिकता के विचार पर आधारित है। प्लेटों के संवादों में न्याय की अवधारणा का प्रतिपादन और उसके बाद उसके पुत्र **पोलीमार्क्स** के द्वारा किया गया है। **सिफालस** के अनुसार— **सत्य बोलना और दूसरों के ऋण को चुका देना ही न्याय हैं।** इसे थोड़ा संशोधित करते हुए उसका पुत्र **पोलीमार्क्स** कहता है कि— **न्याय प्रत्येक व्यक्ति वह देने में है जो उसके लिए उचित है। प्रत्येक व्यक्ति को उसका उचित अधिकार देने में ही न्याय हैं।** इस अवधारणा का विवेचन करने से यह अर्थ निकलता है कि— न्याय एक ऐसी कला है जिसके द्वारा मित्रों की भलाई तथा शत्रुओं की बुराई की जाती है। प्लेटो ने इस अवधारणा को स्वीकार नहीं किया और उन्होंने **न्याय की परंपरावादी अवधारणा का खंडन चार आधारों** पर किया है।

1. **न्याय कला नहीं है—**

प्लेटो का मानना था कि न्याय कला न होकर आत्मा का गुण है। न्याय हमेशा अच्छाई की ओर प्रवृत्त होता है जबकि न्याय आत्मा का गुण व मन की प्रवृति है। न्याय को कला मान लिया जाए तो उसका अच्छे और बुरे दोनों रूपों में प्रयोग किया जा सकता है। यह कला के प्रयोगकर्ता पर निर्भर करता है।

उदाहरण— डॉक्टर अपनी कला से रोगी के रोग को घटा और बढ़ा दोनों सकता है। अर्थात वह अपनी कला का प्रयोग करते हुए न्यायी और अन्यायी दोनों हो सकता है। यदि न्याय को हम इस प्रकार की कला माने तो न्याय का स्वरूप ही विरक्त हो जाएगा।

2. **मित्र–शत्रु की वास्तविक पहचान कठिन—**

न्याय मित्रों का हित और शत्रु का अहित करना है। यह कहना तो उस सरल हो सकता है किन्तु वास्तविक दृष्टि से मित्र और शत्रु कौन है या पहचानना कठिन है। अर्थात शत्रु और मित्र के आधार पर न्याय करना व्यवहार में कठिन है। एक अच्छा मित्र भी शत्रु हो सकता है। व्यक्ति के अंदर छिपी बात कोई नहीं जान सकता। अत: यह पहचानना मुश्किल है कि कौन मित्र है और कौन शत्रु।

3. **बुरे को अधिक बुरा बताना उचित नहीं—**

मित्रों की भलाई और शत्रुओं की बुराई करने का सिद्धांत मूलत: गलत है क्योंकि शत्रुओं की भलाई करने के बजाय उनकी बुराई करके उन्हें और अधिक बुरा बनाना किसी भी न्याय सिद्धांत के अनुसार उचित नहीं माना जा सकता है। न्याय का ध्येय हमेशा हितकारी होता है, अहितकारी नहीं।

4. **न्याय का स्वरूप वैयक्तिक नहीं है—**

सिफालस तथा **पोलीमार्क्स** न्याय की व्याख्या वैयक्तिक आधार पर करते हैं जबकि न्याय का स्वरूप मुख्य रूप से सामाजिक होता है वह व्यक्ति कल्याण साधन नहीं वरन् समाज कल्याण का साधन होता है। जो न्याय व्यक्ति कल्याण को प्रमुखता और सामाजिक कल्याण की अवहेलना करता है उसे सही दृष्टि से न्याय नहीं माना जा सकता।

(ब) न्याय की उग्रवादी अवधारणा—

इस अवधारणा के प्रतिपादक **थ्रेसीमेक्स** है। उसके अनुसार न्याय शक्तिशाली का हित है। इसका अर्थ है कि— **जिसकी लाठी उसकी भैंस।** शासक के हितों की पूर्ति ही न्याय हैं। व्यक्ति के लिए न्यायप्रिय होने का अर्थ है कि वह सरकार व शासन के हितों का साधन बन जाए। न्याय की अवधारणा का तात्पर्य यह भी है कि सरकार सदा स्वयं से स्वार्थ के लिए शासन करती है अन्याय न्याय से अच्छा है।

प्लेटो इस अवधारणा का खंडन निम्न तर्कों के आधार पर करता है—

- व्यक्ति सामाजिक व्यवस्था का एक अविभाज्य अंग है इस सामाजिक व्यवस्था में उसके कर्तव्यों का स्थान निश्चित है। व्यक्ति का सच्चा सुख अपने कर्तव्यों के पालन में है ना कि स्वार्थों की पूर्ति में।
- शासक एक सच्चे कलाकार की तरह होता है। एक सच्चा न्यायपूर्ण शासक वह है जो अपनी कलाकृति अर्थात अपने नागरिकों के हितों में वृद्धि करता है। वह सीमित स्वार्थों का सेवक ना होकर समूचे समाज के हितों का सेवक या पोषक होता है।
- न्यायी व्यक्ति ही अन्यायी की तुलना में बुद्धिमान होता है। वह अपने निर्दिष्ट कर्तव्यों को पूरा करता हुआ आत्मानंद प्राप्त करता है। इस प्रकार न्यायी, अन्याय से अच्छा है ना कि अन्यायी, न्याय से।

(स) न्याय की व्यवहारवादी धारणा—

न्याय की सुबह व्यवहारवादी धारणा का प्रतिपादक **ग्लांकन** है। ग्लांकन का मानना है कि— न्याय एक कृत्रिम वस्तु है तथा यह परंपरा की उपज है। अतः वह शक्तिशालियो का नहीं दुर्बलो के हितों का प्रतिनिधित्व करता है। वह कहता है कि प्रारंभिक प्राकृतिक अवस्था में शक्तिशाली व्यक्ति स्वतंत्रतापूर्वक अन्याय करते थे और दुर्बल व्यक्ति विवश होकर उसे सहन करते थे। **ग्लांकन** का मत है कि न्याय भय की संतान है तथा वह दुर्बलो की आवश्यकता है। इस प्रकार न्याय की उत्पत्ति ग्लांकन के अनुसार शक्तिशालियो से दुर्बलो की रक्षा करने हेतु हुई है। प्लेटो न्याय की इस धारणा से असहमत है। वह न इसे भय की संतान मानता है न ही कृत्रिम वस्तु। इसके विपरीत वह इसे आत्मा का स्वाभाविक या एक आंतरिक गुण मानता है तथा उसका पालन व्यक्ति भय या सत्ता के कारण नहीं वरन् आत्मिक गुण होने के कारण स्वेच्छा से करता है। इस प्रकार प्लेटो अपने समय में प्रचलित न्याय की तीनों अवधारणाओं— **परंपरावादी, उग्रवादी** तथा **व्यवहारवादी** को अस्वीकार कर उनके स्थान पर न्याय की अवधारणा का प्रतिपादन करता है।

(द) न्याय की अवधारणा—

प्लेटो का न्याय सिद्धांत इस अवधारणा पर आधारित है कि प्रत्येक मनुष्य का अपना अलग-अलग स्वभाव होता है। वह न्याय को मनुष्य आत्मा का एक अनिवार्य गुण मानता है तथा मनुष्य और राज्य में साम्य दिखाने के लिए यह प्रतिपादित करता है कि राज्य व्यक्ति का ही वृहद् रूप है। अतः राज्य के गुणों और व्यक्ति के गुण समान है। व्यक्ति के तीन गुण प्रमुख होते है— **तृष्णा, शौर्य तथा विवेक**। इसी तरह राज्य में भी तीन वर्ग प्रमुख होते हैं— **तृष्णा का प्रतिनिधित्व करने वाला उत्पादक वर्ग, शौर्य का प्रतिनिधित्व करने वाला सैनिक वर्ग और विवेक का प्रतिनिधित्व करने वाला संरक्षक या शासक वर्ग**। अतः जिस तरह , शौर्य और विवेक का उचित समन्वय व्यक्ति के न्याय की सृष्टि करता है उसी तरह राज्य के उत्पादक, सैनिक, शासक वर्ग में उचित समन्वय न्याय की आवश्यकता की सृष्टि करता है

न्याय की अवस्था की सृष्टि करता है। न्याय की इस अवधारणा को स्पष्ट करते हुए वह कहता है कि व्यक्ति जब अपने चरित्र के इन तीनों गुणों में से प्रमुख गुण के अनुसार अपने कर्तव्यों का निर्वाह करता है तो वह न्याय का निर्वाह करता है। **न्याय प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में विराजमान हैं और यदि वह अपने कर्तव्य का उचित ढंग से पालन करें तो वह न्याय प्रियता का ही परिचय देता है।**

न्याय सिद्धांत की विशेषताएं—

1. त्रिगुण आधारित व्यक्ति अथवा राज्य—

प्रत्येक व्यक्ति में तीन नैसर्गिक गुण होते है— विवेक, साहस/ शौर्य, तृष्णा। राज्य भी जो व्यक्ति का विराट रूप है इन्हीं गुणों को परिवेक्षित करता है। ज्ञानवान— शासक वर्ग, शौर्य— सैनिक वर्ग, तृष्णा युक्त वर्ग उत्पादक वर्ग का निर्माण करते हैं। इन तीनों वर्गों में सुंदर समन्वय ही न्याय की सृष्टि करता है और राज्य को आदर्श रूप प्रदान करता है।

2. नैतिक सिद्धांत—

प्लेटो के न्याय सिद्धांत की एक विशेषता यह भी है कि उसका न्याय सिद्धांत आधुनिक युग की तरह वैधानिक नहीं पूर्णत: नैतिक है। वह सार्वलौकिक न्याय की स्थापना करता है सिर्फ वैधानिक न्याय कि नहीं। इसमें मानव के केवल वैधानिक कर्तव्यों को ही नहीं वरन् समस्त कर्तव्यों का उल्लेख किया गया है।

3. दार्शनिक शासक—

न्याय की प्राप्ति के लिए यह नितांत आवश्यक है कि राज्य की शासन व्यवस्था विवेकशील, निस्वार्थी और कर्तव्यपरायण व्यक्तियों के हाथ में हो। उपयुक्त गुणों से युक्त व्यक्ति को ही प्लेटों के द्वारा दार्शनिक शासक का नाम दिया गया है जो कि इसके इस स्थान की प्रमुख विशेषताओं में से एक है।

4. सामंजस्य तथा एकता का सिद्धांत—

प्लेटो अपने न्याय के सिद्धांत द्वारा राज्य के तीनों वर्गों का आत्मा के तीनों तत्वों में सामंजस्य और एकता बनाए रखना चाहता है। प्लेटो का न्याय सिद्धांत समरसता का सिद्धांत है, एकता व सहयोग का सिद्धांत है, प्रेम और शांति का सिद्धांत है। यह न्यायिक समाज की स्थापना का सूचक है।

5. स्त्रियों को समान अधिकार—

प्लेटो अपने न्याय सिद्धांत में स्त्रियों और पुरुषों को समान मानकर स्त्रियों को सार्वजनिक क्षेत्र में बराबर अधिकार प्रदान करता है। प्लेटो का विश्वास है कि स्त्रियां राजनीतिक व सैनिक कार्यों की में भाग ले सकती हैं।

6. **प्लेटो न्याय को दो भागों में— वैयक्तिक न्याय तथा सामाजिक न्याय में बांटता है।** प्लेटो का न्याय सिद्धांत आदर्श राज्य का रक्षक व त्राता है।

प्लेटो के न्याय सिद्धांत की आलोचना है—

1. प्लेटो का न्याय केवल नैतिक है कानूनी नहीं—

प्लेटो का न्याय सिद्धांत किसी दंडकारी शक्ति के अभाव में केवल नैतिक बनकर रह जाता है। जब तक किसी कर्तव्य के पीछे कानूनी सकती ना हो तो वह प्रभावी नहीं हो सकता।

बार्कर के अनुसार— प्लेटो का न्याय वस्तुत: न्याय नहीं है, यह मनुष्यों को केवल अपने कर्तव्यों तक सीमित करने वाली भावना मात्र है कोई ठोस कानून नहीं। प्लेटो ने कानून की व्यवस्था ना करके न्याय को निष्क्रिय बना दिया है।

2. व्यक्ति का सर्वांगीण विकास संभव नहीं—

प्लेटो के इस सिद्धांत का एक दोष यह भी है कि प्लेटो की न्यायिक कल्पना शक्ति एक कार्य तथा कार्य के विशिष्टिकरण पर आधारित है। जिसे स्वीकार कर लेने पर व्यक्ति का सर्वांगीण विकास संभव नहीं है। अर्थात् व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व के विकास के लिए उसे अपनी सारी योग्यताओं व क्षमताओं को विकसित करने का अवसर मिलना चाहिए अर्थात् आत्मा की तीनों गुणों का विकास करने का अवसर मिलना चाहिए किन्तु प्लेटो व्यक्ति को केवल आत्मा के किसी एक गुण के आधार पर ही कार्य विशिष्टिकरण पर जोर देता है। इस प्रकार व्यक्ति का सर्वांगीण विकास नहीं हो पाता और इसके अभाव में समाज का सर्वांगीण विकास संभव नहीं है।

3. वर्तमान समय में राज्यों पर लागू करना संभव नहीं—

प्लेटो के न्याय सिद्धांत का वर्तमान समय में राज्यों में लागू नहीं किया जा सकता। प्लेटो की समय में थोड़ी जनसंख्या वाले नगर राज्य थे किंतु वर्तमान समय में राज्यों की जनसंख्या करोड़ों होती है इन राज्यों की जनसंख्या की तीन वर्गों में विभाजित कर प्रत्येक व्यक्ति के लिए कार्य निश्चित कर पाना संभव नहीं है।

4. सर्वाधिकारवाद का मार्ग प्रशस्त होना—

प्लेटो का न्याय सिद्धांत इस कारण भी अस्वीकार्य है कि इससे सर्वाधिकारवाद का मार्ग प्रशस्त होता है। समाज के किस व्यक्ति को किस श्रेणी में रखा जाए इसका निश्चय शासक वर्ग ही करेगा। शासक वर्ग की शक्ति की कोई सीमा नहीं है और उसे सदैव शासक वर्ग ही बने रहना है। ये मार्ग सर्वाधिकारवाद की ओर ले जाता है जिसे किसी भी प्रकार मानव जाति के हित में नहीं कहा जा सकता। प्लेटो के सिद्धांत की आलोचना यह भी है कि प्लेटो ने अपने न्याय सिद्धांत में किसी व्यक्ति द्वारा दूसरे के कार्य क्षेत्र में हस्तक्षेप करने पर दंड का कोई प्रावधान नहीं किया है। प्लेटो के सिद्धांत में अनुभव का कोई महत्व नहीं। प्लेटो का न्याय सिद्धांत मानव स्वभाव के विरुद्ध है। यह सिद्धांत अप्रजातांत्रिक भी है क्योंकि उत्पाद वर्ग को सदैव के लिए शासन में भाग लेने से वंचित कर दिया जाता है। संक्षेप में प्लेटो की न्याय की धारणा का बहुत ही तीक्ष्ण बुद्धि वाले दार्शनिक(**प्लेटो**) की अव्यवहारिक कल्पना है।

(2) आदर्श राज्य का सिद्धांत—

प्लेटो ने अपनी प्रसिद्ध ग्रंथ **रिपब्लिक** में आदर्श राज्य का चित्रण किया है। आदर्श राज्य के स्वरूप का निर्धारण करने में उसने केवल इस दृष्टि से ही विचार किया है कि राज्य का स्वरूप कैसा होना चाहिए ? और उसने इस बात को ध्यान में नहीं रखा क्या विधमान राज्य आदर्श की इस अवधारणा को प्राप्त कर सकते हैं। उसके लिए या एक नितांत गौण प्रश्न है। प्लेटों के प्रमुख ग्रंथ रिपब्लिक का मुख्य उद्देश्य एक ऐसे आदर्श राज्य का निर्माण करना है जो सभी प्रकार के विकारों और भ्रष्टाचारों से मुक्त हो। उनका आदर्श राज्य अच्छाई या सद्गुणों का मूर्त रूप है। प्लेटो उसे निर्मित करने हेतु अपनी कल्पना की दौड़ वहां तक लगाता है जहां तक दौड़ लगाना संभव है। वह इस दृष्टि से इस बात की चिंता नहीं करता कि कल्पना के आधार पर वह जिन सिद्धांतों तथा आदर्शों की स्थापना कर रहा है वे व्यवहारिक धरातल पर आधारित है भी या नहीं। उसके लिए आदर्श सर्वोपरि महत्व के है उनकी व्यवहारिकता नहीं। प्लेटो के आदर्श राज्य की कल्पना अत्यंत मौलिक है। **इस राज्य के चित्रण के कई कारण है—**

1. प्लेटो आदर्शवादी होने के नाते पदार्थ की बजाय विचार को ही वास्तविक मानता है। उसके अनुसार वास्तविकता किसी वस्तु में नहीं बल्कि वस्तु के बारे में जो भाव है उसमें है। इस तर्क के आधार पर प्लेटो मौजूदा राज्यों को परिवर्तनशील क्षणभंगुर और अवास्तविक मानता था।

2. अपने समय की एथेंस की राजनीतिक तथा सामाजिक बुराइयों से प्लेटो चिंतित था। उन्हें सुधारने के लिए उन्होंने आदर्श राज्य की कल्पना की।

3. प्लेटो उस समय के नगर राज्यों के शासकों के लिए राज्य का एक आदर्श प्रस्तुत करना चाहता था ताकि वे अपने नगरों में राजनीतिक और सामाजिक सुधार ला सकें।

आदर्श राज्य की विशेषताएं—

1. राज्य व्यक्ति का वृहद् रूप है—

प्लेटो के अनुसार राज्य व्यक्ति का वृहद् रूप है। जो गुण व विशेषताएं व्यक्ति में थोड़ी मात्रा में पाई जाती हैं वहीं गुण व विशेषताएं राज्य में व्यापक रूप में पाई जाती है। राज्य मानव आत्म का वृहद् रूप है। जब आत्मा विस्तृत रूप मे बाहर प्रकट होती है तब वह राज्य का रूप धारण कर लेती है। व्यक्ति के आत्मा रूपी गुण राज्य का निर्माण करते हैं। प्लेटो के अनुसार मानव आत्मा के तीन गुण है— साहस, बुद्धि और लालसा। प्लेटो का कहना कि आत्मा के ये तीनों गुण राज्य तथा समाज का में शासक, सैनिक तथा उत्पादक वर्ग है। इन तीनों में संबंध कराने वाला राज्य आदर्श राज्य होता है।

2. दार्शनिकों का शासन—

प्लेटो के आदर्श राज्य की सर्वप्रमुख विशेषता दार्शनिकों का शासन है। प्लेटो के अनुसार दार्शनिक शासन राज्य के हितों के साथ स्वयं अपने हितों का पूर्ण तादात्म्य स्थापित कर लेता है और समुदाय के हितों की पूर्ति करना अपना सर्वप्रमुख तथा एकमात्र कर्तव्य समझता है। वह सत्य का अनवरत अनुवेषक होता है और उसमें एक श्रेष्ठ आत्मा की सभी लक्षण होते है।

3. न्याय की प्राप्ति—

प्लेटो का आदर्श राज्य की आधारशिला न्याय हैं। न्याय से प्लेटो का तात्पर्य केवल इतना है कि समाज का प्रत्येक व्यक्ति तथा प्रत्येक वर्ग अपने नैसर्गिक गुणधर्म द्वारा निश्चित कार्य को कुशलतापूर्वक करें।

4. राज्य एक नैतिक या आत्मिक —

प्लेटो का आदर्श राज्य किसी ऐतिहासिक प्रक्रिया के विकास का परिणाम नहीं है। वह मनुष्य के मस्तिष्क की उपज है। वह एक मानसिक संस्था है। अतः राज्य की चेतना में मौलिक अंत नहीं है। वह सद्गुणों का एक समुच्चय है अतः उस में रहकर ही व्यक्ति अपना सर्वोच्च आत्मिक विकास कर सकता है। नैतिक दृष्टि से स्वयं को एक पूर्ण मनुष्य बना सकता है। इस तरह व्यक्ति और राज्य अविछिन्न रूप से जुड़े हुए हैं और आदर्श की दृष्टि से लघु और वृहत्तर के अंतर के अतिरिक्त और किसी दृष्टि से भिन्न नहीं है। आदर्श राज्य में सार्वजनिक और वैयक्तिक नैतिकता एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

5. सर्वाधिकारवादी राज्य—

प्लेटो का आदर्श राज्य अपनी प्रकृति में सर्वाधिकारवादी है क्योंकि वह व्यक्ति के जीवन के सभी क्षेत्रों को अपने नियंत्रण में रखना चाहता है।

कार्यात्मक विशेषीकरण का सिद्धांत—

प्लेटो के आदर्श राज्य में कार्यात्मक विशेषीकरण का सिद्धांत लागू है। प्रत्येक व्यक्ति केवल उन्हीं कार्यों का संपादन करते हैं जिन्हें करने के लिए वह सर्वाधिक योग्य है।

1. स्त्री–पुरुष को समान अधिकार—

आदर्श राज्य में प्लेटो नारियों(स्त्रीयों) को घर की चारदीवारी से बाहर निकालकर उन्हें शिक्षा जीवनयापन, शासन आदि जीवन के सभी क्षेत्रों में पुरुष के समान अधिकार प्रदान करता है।

2. शिक्षा व्यवस्था व शासकों पर नियंत्रण—

प्लेटो के आदर्श राज्य में शिक्षा शासकों के प्रत्यक्ष नियंत्रण में है। प्लेटो का विचार है कि शिक्षा राज्य की प्रकृति और आवश्यकताओं के अनुकूल हों इसके लिए शिक्षा राज्य द्वारा सुनियोजित और नियंत्रित होनी चाहिए।

3. कला और साहित्य पर राज्य नियंत्रण—

प्लेटो अपने आदर्श राज्य के स्वरूप को बनाए रखने के लिए कला व साहित्य पर कठोर नियंत्रण का पक्षपाती है। उन्होंने अपनी आदर्श राज्य में नागरिकों के नैतिक उत्थान की दृष्टि से संगीत, कला, साहित्य आदि के ऐसे अंशो को प्रतिबंधित एवं नियंत्रित करता है जो नैतिकता व सदाचार की प्रतिकूल हो। इस प्रकार प्लेटो विकृत कला व साहित्य पर प्रतिबंध लगाकर नैतिक व्यवस्था स्थापित करके जनता में सद्गुणों का विकास करना चाहता है।

प्लेटो के आदर्श राज्य की आलोचनाएं —

प्लेटो के आदर्श राज्य को एक ऐसा स्वप्नलोकीय राज्य कहा जाता है जिसकी स्थापना पृथ्वी पर संभव नहीं है। उनके द्वारा प्रस्तावित आदर्श राज्य की योजना की प्रमुख रूप से निम्नलिखित आलोचनाएं हुई हैं—

1. स्वतंत्रता का निषेध—

प्लेटो का आदर्श राज्य व्यक्तियों को आवश्यक स्वतंत्रता प्रदान नहीं करता। वह इतना नियंत्रणकारी है कि इसमें व्यक्तियों की सभी प्रवृत्तियों का विकास संभव नहीं है। प्लेटो का आदर्श राज्य एक सर्वाधिकारवादी राज्य है पर यह अपने स्वभाव से ही मानवीय स्वतंत्रता के हित में नहीं हो सकता है।

2. कार्यात्मक विशेषीकरण की पद्धति अनुचित—

प्लेटो के आदर्श राज्य का एक प्रमुख आधार आदर्श कार्यात्मक विशेषीकरण की पद्धति या न्याय हैं। कार्यात्मक विशेषीकरण की पद्धति या न्याय के आधार पर मानवीय व्यक्तिव का एक विशेष पक्ष ही विकसित हो पाता है और शेष व्यक्तित्व अप्रभावित रहता है। हम यह कह सकते हैं कि प्लेटोवादी आदर्म मानवीय व्यक्तित्व के सभी पक्षों के विकास की संभावना नहीं है।

3. व्यक्ति और राज्य की समानता को अधिक महत्व—

आलोचकों का कहना है कि प्लेटो ने आदर्श राज्य की अवधारणा में राज्य और व्यक्ति की समानता को अधिक और अनुचित महत्व दिया है। मानवीय आत्मा के तीन तत्वों के आधार पर राज्य के नागरिकों को तीन वर्गों में बांटना वस्तुस्थिति से निश्चित रूप से भिन्न और अव्यावहारिक हैं। व्यक्ति और राज्य में इस प्रकार की समानताओं के निरूपण से अनेक शंकाएं उत्पन्न होती हैं।

4. उत्पाद वर्ग की नितांत उपेक्षा—

प्लेटोवादी आदर्श राज्य की आलोचना का एक प्रमुख आधार यह है कि इसमें उत्पादक वर्ग की नितांत उपेक्षा की गई हैं। वह अन्य दोनों वर्गों के समान इनके लिए न तो विशेष शिक्षा की व्यवस्था करता है और ना ही सामाजिक ढांचे में उनको महत्वपूर्ण स्थिति प्रदान करता है। उत्पादक वर्ग की यह शोषनीय उपेक्षा राज्यों के अस्तित्व को ही नष्ट करने वाली है।

5. शासक वर्ग की निरंकुश सत्ता—

प्लेटो के आदर्श राज्य में कानूनों और नियमों का पूर्ण अभाव है और इसमें दार्शनिकों को निरंकुश सत्ता सौंप दी गई है। जिसे किसी भी प्रकार उचित नहीं कहा जा सकता। इन व्यक्तियों को शिक्षा द्वारा चाहे जितना ही विवेकशील और भीतरागी क्यों ना बना दिया गया हो अनियंत्रित शक्ति पा जाने पर मानवीय स्वभाव के अनुसार इसमें दोष आ जाना स्वभाविक है।

6. शासन शासन के लिए आवश्यक तत्वों की उपेक्षा—

प्लेटो ने आदर्श राज्य में शासन के लिए आवश्यक तत्वों की घोर उपेक्षा की है उनके द्वारा कानून सरकारी पदाधिकारियों की नियुक्ति, न्यायालयों का प्रबंधन और अपराधियों अपराधियों को दंड देने की व्यवस्था का नहीं किया है। इन तत्वों की उचित व्यवस्था के बिना एक आदर्श राज्य का कार्य कठिन ही

प्रतीत होता है।

7. दास प्रथा के संबंध में मौन–

प्लेटो के आदर्श राज्य की अवधारणा का एक बड़ा दोष प्लेटो का तत्कालीन समाज में प्रमुख लक्षण दास प्रथा के संबंध में मौन रहना है। उस समय यूनान में दास प्रथा थी तथा स्थिति अत्यंत दयनीय थी परंतु प्लेटो ने अपने आदर्श राज्य में दासों की स्थिति सुधारने के बारे में कोई उपाय नहीं सूझाया है। उनका दास प्रथा पर यह मौन समर्थन समाज के लिए घातक सिद्ध हो सकता है।

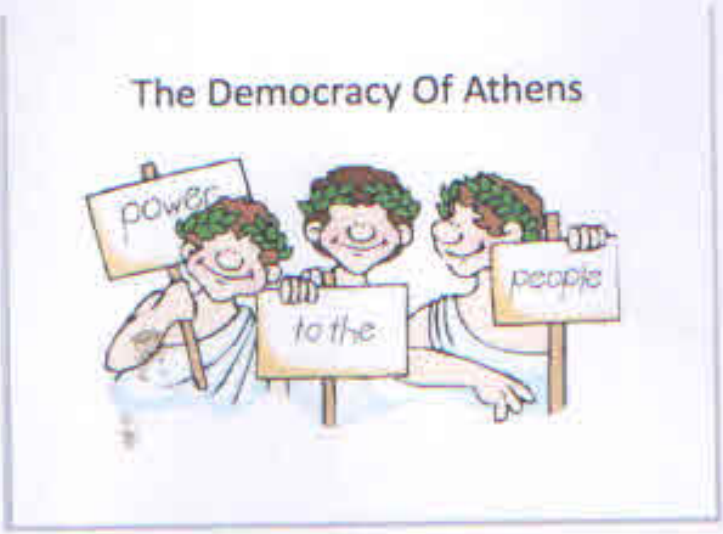

(3) शिक्षा का सिद्धांत —

प्लेटो के आदर्श राज्य का मूलाधार है। प्लेटो अपने आदर्श राज्य में न्याय की प्राप्ति के लिए जिन दो तरीकों को पेश करता है उनमें से शिक्षा एक सकारात्मक तरीका है। समाज में शिक्षा की बहुत आवश्यकता होती हैं। शिक्षा द्वाराराज में भ्रांतभाव और एकता की भावना पैदा होती हैं। प्लेटो की प्रमुख ग्रंथ **रिपब्लिक** में उल्लिखित शिक्षा योजना में **रूसो** इतना प्रभावित हुआ कि उसने उसे— **राजनीति शास्त्र पर लिखित नहीं, शिक्षा पर लिखित सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ कहां है।** प्लेटो के अनुसार शिक्षा सामाजिक सदाचरण का मार्ग है। यह सामाजिक सफलता की कुंजी ही नहीं वरन् सत्य को खोज निकालने का मार्ग है। उनके अनुसार शिक्षा एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था है जो व्यक्ति को समाज निर्माण कार्य हेतु प्रशिक्षित करती हैं।

प्रो. बार्कर के अनुसार— शिक्षा एक ऐसी सामाजिक पद्धति है जिसके माध्यम से समाज के विभिन्न इकाइयों, सामाजिक चेतना से मुक्त होकर सामाजिक हित की आवश्यकताओं को पूर्ण करना सिखाती है। यह एक ऐसा साधन है जिससे समाज और व्यक्ति के विकारों से मुक्त उन्हें रूप प्रदान किया जा सकता है। प्लेटो के अनुसार— **शिक्षा मानसिक व्याधियों से मुक्त होने का मानसिक उपचार हैं।** प्लेटो अपने समय के एथेंस व यूनान की शिक्षा पद्धतियों का गहरा विद्वान था। उसने अपने आदर्श राज्य में की प्राप्ति के लिए शिक्षा का जो सकारात्मक साधन पेश किया वह स्पार्टा दोनों की शिक्षा पद्धतियों पर आधारित था। इसलिए प्लेटो की योजनाओं को समझने से पहले इन दोनों पद्धतियों को जानना आवश्यक है।

1. एथेंस की शिक्षा व्यवस्था—

एथेंस में शिक्षा परिवार का अपना उत्तरदायित्व था अर्थात् वैयक्तिक आधार पर आधारित था और राज्य का उस पर कोई नियंत्रण नहीं था। अतः व्यक्ति जिस तरह की शिक्षा चाहें ग्रहण कर सकता था। लड़के और लड़कियों के लिए शिक्षा की व्यवस्था नहीं थी। लड़कियों को घरेलू आवश्यकताओं की ही शिक्षा दी जाती थी।

एथेंस की शिक्षा प्रणाली तीन स्तरों में विभाजित थी—

(अ) प्राथमिक शिक्षा—

इसके अंतर्गत केवल 6 से 14 वर्ष तक की आयु के बालकों को शिक्षा दी जाती थी। प्राथमिक शिक्षा में केवल पढ़ना लिखना ही सिखाया जाता था और प्राचीन कविता, संगीत, साहित्य की शिक्षा दी जाती थी।

(ब) माध्यमिक शिक्षा—

इसका समय 14 वर्ष से 18 वर्ष का था। इसमें अलंकार शास्त्र, भाषण कला और राजनीति की शिक्षा दी जाती थी। भारी शिक्षण शुल्क के कारण गरीब व्यक्ति इस शिक्षा से वंचित रह जाते थे और ज्यादातर अमीर लोग ही इस शिक्षा का लाभ उठाते थे।

(स) सैनिक शिक्षा—

इस शिक्षा का स्तर 18 से 20 वर्ष की आयु तक था। यह शिक्षा केवल 2 वर्ष तक राज्य द्वारा प्रदान की जाती थी। एथेंस के प्रत्येक युवक के लिए यह शिक्षा अनिवार्य थी। इस शिक्षा में दक्ष होने पर ही व्यक्ति को नागरिक अधिकार प्रदान किए जाते थे। एथेंस की यह शिक्षा पद्धति व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक और चारित्रिक विकास के लिए उपयुक्त थी परंतु इसका सबसे बड़ा दोष यह था कि इसमें शिक्षा देना राज्य का नहीं परिवार का उत्तरदायित्व था। यह शिक्षा पद्धति राज्य की आवश्यकता और उसकी प्रकृति के अनुकूल नहीं थी इसके परिणाम स्वरूप एथेंस अज्ञानी व अयोग्य शासकों द्वारा शासित रहा। शिक्षा बहुत महंगी और धनी व्यक्तियों तक ही सर्वसाधारण व्यक्ति इससे वंचित रह जाते थे।

2. स्पार्टा की शिक्षा व्यवस्था—

स्पार्टा की शिक्षा व्यवस्था एथेंस की शिक्षा व्यवस्था से पूर्णतया भिन्न व विपरीत थी। स्पार्टा में सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था का राज्य द्वारा किया जाता था। 7 वर्ष की आयु प्राप्त करते ही बच्चे को माता-पिता के अधिकार से राज्य नियंत्रण में ले लिया जाता था। स्पार्टा में स्त्री और पुरुष दोनों के लिए समान शिक्षा व्यवस्था लागू थी। स्पार्टा की शिक्षा व्यवस्था में शरीर को स्वस्थ एवं बलिष्ठ बनाने पर विशेष जोर दिया जाता था। शत्रुओं से घिरे होने के कारण उन्हें कठोर सैनिक प्रशिक्षण दिया जाता था। अतः शिक्षा पाठ्यक्रम में व्यायाम तथा संगीत को प्रमुख स्थान प्राप्त था। ज्ञान व विवेक की शिक्षा को कोई महत्व नहीं था। फलतः स्पार्टा अच्छे सैनिक तो बन जाते थे किंतु विवेक की दृष्टि से बहुत कमजोर होते थे। क्योंकि यह पक्ष उनका बहुत उपेक्षित था।

प्लेटो ने एथेंस और स्पार्टा से शिक्षा प्रणाली के गुणों का समन्वय कर शिक्षा व्यवस्था का प्रतिपादन किया है। उन्होंने एथेंस से विवेक पक्ष और स्पार्टा से शारीरिक विकास का पक्ष ग्रहण किया।

प्लेटो की शिक्षा व्यवस्था —

प्लेटो की शिक्षा व्यवस्था स्पार्टा और एथेंस का मिलाजुला रूप है। प्लेटो की शिक्षा पद्धति व्यक्ति के जीवन की अनवरत प्रक्रिया और व्यक्ति की शिक्षा की व्यवस्था राज्य के द्वारा ही की जानी चाहिए। इस पद्धति के अंतर्गत शिक्षा का उद्देश्य के संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास करना है।

प्लेटो ने अपनी शिक्षा व्यवस्था को दो भागों में बांटा हैं—

1. **प्रारम्भिक शिक्षा,**
2. **उच्च शिक्षा।**

प्लेटो की शिक्षा व्यवस्था का अध्ययन करने से पूर्व हमारे लिए क्या जान लेना आवश्यक है कि प्लेटो समाज के सभी वर्गों लिए नहीं वरन् सिर्फ संरक्षण वर्ग के लिए ही शिक्षा की व्यवस्था करता है। उत्पादक वर्ग इससे वंचित रहता है। संरक्षण वर्ग दो भागों में विभाजित है— (1) शासक वर्ग और (2) सैनिक वर्ग। सैनिक वर्ग की शिक्षा 30 वर्ष की आयु तक समाप्त हो जाती हैं। जबकि शासक वर्ग की शिक्षा 50 वर्ष तक जारी रहता है। प्लेटों स्त्री और पुरुष दोनों के लिए समान शिक्षा की व्यवस्था करता है।

(1) प्रारंभिक शिक्षा—

प्रारम्भिक शिक्षा 6 से 20 वर्ष तक की आयु तक चलती है। यह संरक्षण वर्ग की सभी बच्चों के लिए अनिवार्य हैं। प्रारंभिक शिक्षा का उद्देश्य भावनाओं तथा संवेगो को संतुलित और नियंत्रित कर एक विद्यार्थी का चरित्र निर्माण करना है ताकि वह दक्ष और अनुशासित सैनिक के रूप में अपना विकास कर सकें। 18 वर्ष की आयु तक की शिक्षा पाठ्यक्रम में दो प्रमुख विषय होंगे— **व्यायाम** और **संगीत**। प्लेटो ने व्यायाम और संगीत इन दोनों ही शब्दों का प्रयोग व्यापक अर्थों में किया है। व्यायाम का अर्थ केवल शारीरिक कसरते ही नहीं वरन् पूर्ण शारीरिक विकास के साथ-साथ सहिष्णुता, साहस तथा वीरता की मानसिक गुण विकसित कर चारित्रिक विकास का मार्ग प्रशस्त करना है। मन की शिक्षा के लिए संगीत आवश्यक है। संगीत भावनाओं को परिष्कृत करता है और शुद्धि की सुप्त शक्तियों को जागृत करता है। संगीत शब्द का प्रयोग भी प्लेटो ने व्यापक अर्थ में किया है और इसके अंतर्गत नृत्य, संगीत, कविता पाठ व सभी ललित कलाएं सम्मिलित हैं किंतु उसके प्रशिक्षण में प्लेटो ने चरित्र पर बुरा प्रभाव डालने वाले साहित्य, कलाकृतियों पर राज्य कठोर नियंत्रण की व्यवस्था की है। 18 वर्ष तक संगीत व्यायाम की उपयुक्त शिक्षा के बाद 18 से 20 वर्ष तक की आयु तक साहस, आत्म नियंत्रण और अनुशासन की प्रवृत्ति बढ़ाने के लिए सैनिक शिक्षा होगी। प्रारंभिक शिक्षा की इस समस्त व्यवस्था का उद्देश्य सभी व्यक्तियों को श्रेष्ठ नागरिक बनाना है।

(2) उच्च शिक्षा—

प्लेटो की योजना के अंतर्गत प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था सभी के लिए किंतु उच्च शिक्षा की व्यवस्था केवल कुछ प्रतिभा संपन्न व्यक्तियों के लिए ही है। 20 वर्ष की आयु तक प्रारंभिक शिक्षा प्रदान किए जाने के बाद युवकों की बौद्धिक और क्रियात्मक परीक्षा लेने की व्यवस्था की गई। इस परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने वाले व्यक्ति देश के सैनिक व उत्पादक वर्ग का निर्माण करेंगे और कृषक,

प्लेटो की शिक्षा व्यवस्था —

प्लेटो की शिक्षा व्यवस्था स्पार्टा और एथेंस का मिलाजुला रूप है। प्लेटो की शिक्षा पद्धति व्यक्ति के जीवन की अनवरत प्रक्रिया और व्यक्ति की शिक्षा की व्यवस्था राज्य के द्वारा ही की जानी चाहिए। इस पद्धति के अंतर्गत शिक्षा का उद्देश्य के संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास करना है।

प्लेटो ने अपनी शिक्षा व्यवस्था को दो भागों में बांटा हैं—

1. **प्रारम्भिक शिक्षा,**
2. **उच्च शिक्षा।**

प्लेटो की शिक्षा व्यवस्था का अध्ययन करने से पूर्व हमारे लिए क्या जान लेना आवश्यक है कि प्लेटो समाज के सभी वर्गों लिए नहीं वरन् सिर्फ संरक्षण वर्ग के लिए ही शिक्षा की व्यवस्था करता है। उत्पादक वर्ग इससे वंचित रहता है। संरक्षण वर्ग दो भागों में विभाजित है— (1) शासक वर्ग और (2) सैनिक वर्ग। सैनिक वर्ग की शिक्षा 30 वर्ष की आयु तक समाप्त हो जाती हैं। जबकि शासक वर्ग की शिक्षा 50 वर्ष तक जारी रहता है। प्लेटों स्त्री और पुरुष दोनों के लिए समान शिक्षा की व्यवस्था करता है।

(1) प्रारंभिक शिक्षा—

प्रारम्भिक शिक्षा 6 से 20 वर्ष तक की आयु तक चलती है। यह संरक्षण वर्ग की सभी बच्चों के लिए अनिवार्य हैं। प्रारंभिक शिक्षा का उद्देश्य भावनाओं तथा संवेगो को संतुलित और नियंत्रित कर एक विद्यार्थी का चरित्र निर्माण करना है ताकि वह दक्ष और अनुशासित सैनिक के रूप में अपना विकास कर सकें। 18 वर्ष की आयु तक की शिक्षा पाठ्यक्रम में दो प्रमुख विषय होंगे— **व्यायाम** और **संगीत**। प्लेटो ने व्यायाम और संगीत इन दोनों ही शब्दों का प्रयोग व्यापक अर्थों में किया है। व्यायाम का अर्थ केवल शारीरिक कसरते ही नहीं वरन् पूर्ण शारीरिक विकास के साथ-साथ सहिष्णुता, साहस तथा वीरता की मानसिक गुण विकसित कर चारित्रिक विकास का मार्ग प्रशस्त करना है। मन की शिक्षा के लिए संगीत आवश्यक है। संगीत भावनाओं को परिष्कृत करता है और शुद्धि की सुप्त शक्तियों को जागृत करता है। संगीत शब्द का प्रयोग भी प्लेटो ने व्यापक अर्थ में किया है और इसके अंतर्गत नृत्य, संगीत, कविता पाठ व सभी ललित कलाएं सम्मिलित हैं किंतु उसके प्रशिक्षण में प्लेटो ने चरित्र पर बुरा प्रभाव डालने वाले साहित्य, कलाकृतियों पर राज्य कठोर नियंत्रण की व्यवस्था की है। 18 वर्ष तक संगीत व्यायाम की उपयुक्त शिक्षा के बाद 18 से 20 वर्ष तक की आयु तक साहस, आत्म नियंत्रण और अनुशासन की प्रवृत्ति बढ़ाने के लिए सैनिक शिक्षा होगी। प्रारंभिक शिक्षा की इस समस्त व्यवस्था का उद्देश्य सभी व्यक्तियों को श्रेष्ठ नागरिक बनाना है।

(2) उच्च शिक्षा—

प्लेटो की योजना के अंतर्गत प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था सभी के लिए किंतु उच्च शिक्षा की व्यवस्था केवल कुछ प्रतिभा संपन्न व्यक्तियों के लिए ही है। 20 वर्ष की आयु तक प्रारंभिक शिक्षा प्रदान किए जाने के बाद युवकों की बौद्धिक और क्रियात्मक परीक्षा लेने की व्यवस्था की गई। इस परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने वाले व्यक्ति देश के सैनिक व उत्पादक वर्ग का निर्माण करेंगे और कृषक,

मजदूर, शिल्पी, व्यापारी के रूप में कार्य करेंगे। परीक्षा में उत्तीर्ण होने वाले व्यक्ति की उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए अधिकारी होंगे। उच्च शिक्षा के लिए व्यक्ति का चुनाव निष्पक्ष भाव से किया जावेगा। यह शिक्षा राज्य के शासक या संरक्षण वर्ग के लिए है। इसमें स्त्री-पुरुष दोनों भाग ले सकेंगे। इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत गणित, नीति शास्त्र, ज्योतिष और दर्शनशास्त्र का अध्ययन रखा गया है। 10 वर्ष की शिक्षा के बाद 30 वर्ष की आयु में एक परीक्षा होगी जिसमें असफल रहने वाले राज्य के साधारण अधिकारी होंगे और सफल विद्यार्थियों को 5 वर्ष तक गणित, न्याय, तर्क और दर्शन की विशेष शिक्षा दी जाएगी। 5 वर्ष की इस शिक्षा में द्वंद और दर्शन की शिक्षा पर बल दिया जाएगा किंतु 35 वर्ष की यह शिक्षा अपूर्ण ही है क्योंकि इसके अंतर्गत सांसारिक स्थिति का व्यावहारिक अनुभव नहीं है। अतः प्लेटो ने 15 वर्षों तक जीवन की पाठशाला में कठिनाइयां झेलकर व्यावहारिक शिक्षा प्राप्त करने की व्यवस्था की है। इस प्रकार 50 वर्षों की आयु तक जीवन की सभी परीक्षा में खरे उतरने वाले लोग लोक व्यवहार और शास्त्रों का गंभीर ज्ञान रखने वाले दार्शनिक प्लेटो की समति में शासक बनने के अधिकारी हैं।

सेबाइन के शब्दों में— **प्लेटो द्वारा प्रतिपादित उच्च शिक्षा का यह सुझाव सर्वाधिक मौलिक और महत्वपूर्ण है।**

प्लेटो की शिक्षा व्यवस्था की विशेषताएं—

1. **चरित्र निर्माण पर बल** —

प्लेटो की शिक्षा का उद्देश्य नागरिकों को अच्छे या सद्गुणी बनाकर उनमें राज्य के प्रति निस्वार्थ सेवा की भावना जगाना है। प्लेटो शिक्षा को एक ऐसा विधात्मक साधन मानता है जो नागरिकों का चरित्र निर्माण करती हैं।

2. **राज्य द्वारा नियंत्रित तथा अनिवार्य शिक्षा**—

प्लेटो द्वारा प्रस्तावित संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था राज्य द्वारा नियंत्रित और संचालित है। प्लेटो का मानना है कि राज्य के नियंत्रण के अभाव में शिक्षा व्यक्तिगत हितों की ही पोषक होगी, सामाजिक हितों की नहीं। प्लेटो ने शिक्षा प्राप्त करना प्रत्येक परिवार व व्यक्ति के लिए अनिवार्य कर दिया है। राज्य की ओर से शिक्षा के अनिवार्य व्यवस्था हो गई हैं।

3. **स्त्री–पुरुष दोनों के समान शिक्षा**—

प्लेटो की शिक्षा व्यवस्था की यह एक अन्य अन्य विशेषता है। स्त्रियों की दशा में सुधार लाने के लिए उन्होंने स्त्री– पुरुष समानता का सिद्धांत प्रतिपादित किया तथा उनके लिए भी उसी तरह की शिक्षा व्यवस्था का प्रतिपादन किया। जैस पुरूष संरक्षक वर्ग के लिए थी। संरक्षक अर्थात सैनिक और शासक वर्ग की कर्तव्य निर्वाह हेतु उन्हें भी पुरुषों के समान उपयुक्त माना।

4. **सर्वांगीण विकास पर बल**—

प्लेटो की शिक्षा प्रणाली व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक तीनों पक्षों के पूर्ण विकास पर बल देती है। प्लेटो की शिक्षा योजना व्यक्ति के प्रत्येक सद्गुण को विकसित करने का प्रयास करती है।

5. **शिक्षा राज्य के कर्तव्य के रूप में—**

प्लेटो ने अपनी आदर्श राज्य में व्यक्ति को गुणी से सामाजिक बनाने के लिए शिक्षा को अनिवार्य माना है। अर्थात् शिक्षा व्यक्ति और राज्य दोनों का निर्माण करती है। अतः प्लेटो शिक्षा नीति को निजी हाथों में ना सौंप कर राज्य को सौंपता है।

प्लेटो के शिक्षा सिद्धांत की आलोचनाए —

1. **शिक्षा मात्र अभिभावक वर्ग के लिए—**

प्लेटो शिक्षा को महान वस्तु मानता है और उसे आदर्श राज्य का आधार बताता है किंतु उसने समस्त नागरिकों के लिए शिक्षा का प्रबंधन ना करके केवल अभिभावक वर्ग (सैनिक व दार्शनिक) के लिए ही शिक्षा की योजना प्रस्तुत की हैं। इस प्रकार उसकी शिक्षा योजना कुलीनतंत्रवादी हैं जिसे आधुनिक दृष्टि से अप्रजातांत्रिक कहा जाएगा।

2. **शिक्षा क्रम लंबा और खर्चीला है—**

प्लेटो का शिक्षा क्रम इतना लंबा और खर्चीला है कि इसको धनी वर्ग ही ग्रहण कर सकता है। 35 वर्ष तक लगातार अध्ययन से ज्ञान का उत्साह कम हो जाता है और लोगों में इसके प्रति आकर्षण समाप्त हो जाता है। यह राज्य की व्यक्ति के ऊपर जबरदस्ती सौंपी गई इच्छा है।

3. **साहित्य की उपेक्षा—**

प्लेटो ने अपनी शिक्षा योजना में गणित को अधिक महत्व ग्रह साहित्य को कम महत्व दिया है। साहित्य जीवन व समाज का एक दर्पण है और मानव की कोमल भावनाओं को विकसित कर उसके दृष्टिकोण को व्यापक करता है।

4. **राज्य नियंत्रित शिक्षा का स्वरूप उचित नहीं—**

आधुनिक समय में राज्य नियंत्रित शिक्षा का विचार एक उचित विचार नहीं समझा जाता है। वह व्यक्ति स्वायत्त के लिए घातक माना जाता है। इससे व्यक्ति के व्यक्तित्व का स्वतंत्र विकास संभव नहीं हो पाता है। वर्तमान में राज्य नियंत्रण के स्थान पर शिक्षा के स्वायत्त रूप पर जोर दिया जाता है ताकि एक मुक्त वातावरण में शिक्षा प्राप्त कर व्यक्ति अपनी इच्छा तथा योग्यतानुसार अपने व्यक्तित्व का विकास करने में समर्थ हो सके।

(4) प्लेटो का साम्यवाद का सिद्धांत—

प्लेटो ने अपने आदर्श में न्याय की प्राप्ति के लिए दो तरीके अपनाएं हैं उनमें से साम्यवाद का निषेधात्मक व भौतिक तरीका भी शामिल है प्लेटो का मानना है की आदर्श राज्य की स्थापना में तीन बाधाएं अज्ञान निजी संपत्ति वाणिज्य परिवार है इन बाधाओं को दूर करने के लिए प्लेटो शिक्षा का सिद्धांत वह साम्यवादी व्यवस्था का प्रावधान करता है अज्ञान को तो शिक्षा द्वारा दूर किया जा सकता है लेकिन निजी संपत्ति परिवार की संस्था का लॉक करने के लिए वह जिस व्यवस्था का समर्थन करता है वह साम्यवाद के नाम से जानी जाती है प्लेटो का साम्यवाद राजनीतिक सत्ता तथा आर्थिक लोलुपता के सम्मिश्रण से उत्पन्न बुराई को दूर करता है प्लेटो साम्यवाद के द्वारा अभिभावक या संरक्षक वर्ग को संपत्ति तथा पारिवारिक जीवन की चिंताओं से मुक्त रखना चाहता है इस सिद्धांत को प्रतिपादित करने के पीछे प्लेटो का उद्देश्य शिक्षा के माध्यम से निस्वार्थ शासकों को तैयार करने के बाद भी सांसारिक आकर्षणों और चारित्रिक दुर्बलता ओं के शिकार होकर अपने कर्तव्य पथ से भटकने को रोकना है प्लेटो साम्यवाद को समाज का आध्यात्मिक उत्थान करने का नकारात्मक मार्ग कहता है वह इसे व्यक्ति के उत्थान का भौतिक साधन मानता है प्लेटो का मानना है कि कंचन और कामिनी का मुंह संरक्षक वर्ग को धन लोलुप स्वार्थ स्वार्थी और अशक्त बना देता है अतः संरक्षक वर्ग को अपने कर्तव्य पथ से विचलित होने से रोकना अति आवश्यक है इसके लिए वह संपत्ति और पत्नियों का साम्यवाद का सिद्धांत पेश करता है किसके बारे में बारकर ने कहा है - प्लेटो के लिए आदर्श समाज की स्थापना में संपत्ति और परिवार का साम्यवाद उसके शिक्षा द्वारा आत्मिक उत्थान के प्रयास का एक भौतिक और आर्थिक साधन है।

साम्यवाद के प्रेरणा स्त्रोत—

साम्यवाद का प्रतिपादन प्लेटो का कोई भौतिक विचार नहीं है। उसके समय में कई नगर राज्यों में साम्यवादी या उससे मिलती-जुलती व्यवस्थाएं कार्यरत थी प्लेटो की यह व्यवस्थाएं ही प्रेरणा स्त्रोत थी जिनसे प्रेरित होकर उसने अपने आदर्श राज्य के संरक्षक वर्ग के लिए साम्यवादी व्यवस्था का प्रतिपादन किया। स्पार्टा नगर राज्य में शासक वर्ग सार्वजनिक भोजनालयों में भोजन करते थे , तो क्रीट नामक नगर राज्य में सामूहिक खेती का प्रचलन था । पाइथागोरस के अनुयायियों का मत था कि "मित्रों के मध्य सभी वस्तुओं पर सभी का सामूहिक स्वामित्व होना चाहिए " । प्लेटो से पूर्व यूरीपाइडीज नामक विचारक में पत्नियों का साम्यवाद के सिद्धांत का समर्थन किया था इन सभी विचारों से और कार्यों से प्रेरित होकर ही प्लेटो ने अपनी रिपब्लिक में शासक वर्ग के लिए संपत्ति और पत्नियों के साम्यवाद का प्रतिपादन किया। अतः प्लेटो की साम्यवादी व्यवस्था के दो रूप हैं- पहला **संपत्ति का साम्यवाद** दूसरा **स्त्रियों या पत्नियों का साम्यवाद**।

1. संपत्ति का साम्यवाद—

प्लेटो ने अभिभावक वर्ग (आदर्श राज्य के संरक्षक वर्ग) के लिए संपत्ति के साम्यवाद की व्याख्या करते हुए कहा है कि उनके पास केवल उतनी ही संपत्ति होगी जितनी जीवन निर्वाह के लिए अत्यंत आवश्यक है इसके अतिरिक्त न तो उनके पास अपना कोई मकान होगा और न ही कोई गोदाम जो सबके लिए खुला ना हो (अर्थात् उनका आवाज सभी के लिए खुला रहेगा जिसमें कोई भी कभी भी आ सके) वे सामान्य भोजनालयों में भोजन करेंगे। सैनिकों की तरह डेरों में रहेंगे तथा इनके लिए सोना चांदी का स्पर्श वर्जित होगा। ऐसे मुक्त लोग ही राज्य के संरक्षक होंगे अर्थात् चल अचल संपत्ति से विरक्त होकर वे

देश की सेवा और रक्षा करेंगे इसी में उनकी मुक्ति है और ऐसा करने से वे राज्य के रक्षक बन सकेंगे।

प्लेटो के इस संपत्ति विषयक साम्यवाद की कुछ विशेषताएं है जो निम्नानुसार है—

- यह साम्यवाद सभी नागरिकों के लिए नहीं वरन् केवल शासक और सैनिक वर्ग के लिए है इसका उद्देश्य यद्यपि संपूर्ण समाज का कल्याण है किंतु इसे संपूर्ण समाज द्वारा व्यवहार में नहीं लाया जाता है।
- इसका उद्देश्य राजनीतिक है आर्थिक नहीं। आधुनिक साम्यवाद की तरह है इसका उद्देश्य आर्थिक विषमता दूर करना नहीं वरन् राजनीति और शासन व्यवस्था को दोष मुक्त करना है।
- प्लेटो का संपत्ति विषयक साम्यवाद भूख का नहीं त्याग का साधन है । वह संरक्षक वर्ग को धन के आकर्षण से मुक्त करके लोक कल्याण में रत रहने के लिए प्रेरित करता है उसकी इसी विशेषता को स्पष्ट करते हुए **फोस्टर** कहता है – **"प्लेटो के संरक्षक वर्ग को सामूहिक रूप से संपत्ति का स्वामित्व नहीं वरन उस का त्याग करना है।"**

2. पत्नियों का साम्यवाद—

प्लेटो के साम्यवाद का दूसरा रूप पत्नियों का साम्यवाद है। पत्नियों की साम्यवादी व्यवस्था का प्रतिपादन प्लेटों में मुख्य रूप से तीन उद्देश्य को सिद्ध करने की दृष्टि से किया। इस दृष्टि से उसका पहला उद्देश्य था— **संरक्षक वर्ग को वैज्ञानिक वैयक्तिक परिवार प्रथा की कुप्रथा से मुक्त करना।** प्लेटो की मान्यता थी कि वैयक्तिक परिवार प्रथा के कारण कभी-कभी शासक वर्ग पारिवारिक मोह से अंधा होकर ऐसे कार्य करने के लिए उद्धत हो जाता है जो अनुचित ही नहीं अनैतिक भी होते हैं। आधुनिक संदर्भ में इसे परिवारवाद भाई–भतीजावाद कह सकते हैं। अपने आदर्श राज्य के शासकों को इस पारिवारिक अंधा मोह से मुक्त करने के लिए प्लेटो ने व्यक्तिगत परिवार का उनके लिए उन्मूलन करना है। उचित समझ को इस दृष्टि से उसने प्रतिपादित किया है कि संरक्षक वर्ग के स्त्री–पुरुषों में कोई भी अपना निजी परिवार बस नही आएगा। स्त्रियां सब की समान रूप से पत्नियां होगी। इनकी संताने ही समान रूप से सभी की संताने होगी ना तो माता–पिता अपनी संतान को जान सकेगी और न ही संतान माता–पिता को। पत्नियों के साम्यवाद के प्रतिपादन का दूसरा कारण प्लेटो के समय में एथेंस में प्रचलित स्त्रियों की दुर्दशा थी। उनको घर की चार-दीवारी में कैद रखा जाता था तथा उनका कार्यक्षेत्र घर गृहस्थी संभालना, बच्चे पैदा करना, और उनके पालन पोषण तक ही सीमित था। सार्वजनिक जीवन में किसी तरह से भाग लेने और किसी उत्तरदायित्व का निर्वहन करने के लिए योग्य नहीं समझी जाती थी। प्लेटो स्त्रियों की इस दुर्दशा के लिए वैयक्तिक आधार पर गठित परिवार प्रथा को उत्तरदायी मानता था। अतः उसने स्त्रियों की दशा सुधारने और उन्हें गृहस्थ की गुलामी से मुक्त करने के लिए व्यक्ति परिवार प्रथा का उन्मूलन आवश्यकता समझा । फलतः अपने आदर्श राज्य में उसने स्त्रियों को पुरुष के समकक्ष घोषित कर उन्हें समानता का स्तर प्रदान किया। और उन्हें वे सब कार्य करने के लिए समकक्ष और अधिकारी माना जो पुरुषों के द्वारा किए जाते हैं। प्लेटो का स्त्री मुक्ति और उन्हें पुरुष के समकक्ष मान्यता तीसरा कारण या उद्देश्य श्रेष्ठ संतान की प्राप्ति से था। स्थाई विवाह पद्धति का इस दृष्टि से समर्थक नहीं था। उसके स्थान पर उसने अस्थाई विवाह पद्धति का समर्थन किया। वह चाहता था कि अस्थाई विवाह बंधन के माध्यम से श्रेष्ठ बलिष्ठ और बुद्धिमान पुरुषों का सुंदर सुसंस्कृत और स्वस्थ स्त्रियों से समागम हो तथा उससे श्रेष्ठ और स्वस्थ संतान को जन्म दे सके तथा उनका राज्य संरक्षण में पालन-पोषण हो ताकि दार्शनिक संरक्षक वर्ग के निर्माण की प्रक्रिया निरंतर जारी रहे और आदर्श राज्य

व्यवस्था सौतन बनी रह सके। अतः प्लेटो पत्नियों के साम्यवाद के माध्यम से स्त्रियों को घर गृहस्थी के बंधन से मुक्त करके उन्हें पुरुष संरक्षको के समान व्यवस्था प्रदान करना चाहता था ताकि उनकी क्षमताओं का भी आदर्श राज्य की स्थापना मे उपयोग किया जा सके।

प्लेटो के साम्यवाद की विशेषताएं—

प्लेटो की संपत्ति व पत्नियों के संबंधित साम्यवाद की निम्नलिखित विशेषताएं हैं -

1. **न्याय की पूरक व्यवस्था** –

प्लेटो के न्याय सिद्धांत का प्रमुख उद्देश्य आदर्श राज्य की स्थापना करना है प्लेटो ने न्याय सिद्धांत के व्यवहारिकता के लिए दो साधनों शिक्षा एवं साम्यवाद को अपनाया है। शिक्षा योजना न्याय की प्राप्ति का आध्यात्मिक व सकारात्मक साधन है। वही साम्यवादी योजना न्याय की प्राप्ति का भौतिक व नकारात्मक साधन है।

2. **राजनीतिक** –

प्लेटो का साम्यवाद आर्थिक न होकर राजनीतिक है। प्लेटो के साम्यवाद का उद्देश्य आर्थिक असमानता को दूर करना नहीं था अपितु तात्कालिक राजनीतिक दोषों को दूर करना था । प्लेटो चाहता था कि शासन की बागडोर दार्शनिक शासन के हाथों में हो।

3. **राज्य की एकता की रक्षक व्यवस्था-**

प्लेटो राज्य में एकता स्थापित करने के लिए संरक्षक वर्ग के लिए साम्यवादी व्यवस्था की योजना प्रस्तुत करता है। प्लेटो की साम्यवादी योजना अभिभावक वर्ग को कंचन और कामिनी के मोह से दूर रख कर सार्वजनिक हित में शासन करने के लिए प्रेरित करेगी। स्त्रियों को भी राज्य की सेवा का सक्रिय अवसर मिलेगा, इससे राज्य की एकता में वृद्धि होगी।

4. **अर्ध साम्यवाद** –

प्लेटो का साम्यवादी व्यवस्था समाज के केवल एक वर्ग (शासक वर्ग)पर लागू होती है ,उत्पादक वर्ग पर नहीं। इसमें संरक्षक वर्ग संपत्ति और कुटुम से अछूता रहेगा उत्पादक वर्ग की अपनी संपत्ति और परिवार रहेगा। इसलिए इसे अर्ध साम्यवाद की संज्ञा दी जाती है।

5. प्लेटो का साम्यवाद अभिजातवर्गीय साम्यवाद था।

6. प्लेटो के साम्यवाद का स्वरूप तपस्यात्मक हैं।

प्लेटो के साम्यवाद की आलोचनाएं—

1. **राज्य परिवार का रूप धारण नहीं कर सकता** –

अरस्तु की मान्यता है कि चाहे हम लाख प्रयत्न कर ले फिर भी राज्य परिवार का रूप धारण नहीं कर सकता। उसके सदस्यों के मध्य वे प्रगाढ़ संबंध विकसित नहीं हो सकते जैसे प्रगाढ़ संबंध परिवार के सदस्यों में होती हैं। एक माता-पिता की हजारों बच्चे और हजारों बच्चे की एक माता-पिता उन पर वह स्नेह वृष्टि नहीं कर सकते जो एक स्वाभाविक परिवार की माता पिता अपनी संतान पर कर सकते हैं। अतः राज्य रूपी परिवार जितना वृहद होगा उसमें परिवारिक संबंध उतने ही क्षीण और कृत्रिम होंगे।

2. **भ्रष्टाचार की नीति को बढ़ावा** –

प्लेटो ने अपने साम्यवाद में शासक वर्ग एवं सैनिक वर्ग को उत्पादक वर्ग के अधीन कर दिया है। आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उन्हें उत्पादक वर्ग पर निर्भर रहना पड़ेगा। इस कारण शासक वर्ग उत्पादक वर्क की गलत बातों को भी सहन करेगा। इससे भ्रष्टाचार की नीति को बढ़ावा मिलेगा।

3. **प्लेटो का साम्यवाद नकारात्मक है** –

प्लेटो का साम्यवाद नकारात्मक है। **बार्कर** का कहना है **"प्लेटो की साम्यवादी व्यवस्था एक ऐसी धारणा है जिसका समाज की आर्थिक व्यवस्था से कोई संबंध नहीं है। वह उत्पादन की व्यक्तिवादी व्यवस्था को वैसा ही छोड़ देता है और एक भी उत्पादक वर्ग को स्पर्श नहीं करता।"**

4. **परिवार राज्य का वृहद् रूप** –

अरस्तु परिवार को राज्य का वृहद रूप मानता है। परिवार उसकी आधारभूत इकाई है।अतः हम यदि परिवार को ही नष्ट कर देते हैं तो अप्रत्यक्ष रूप से हम राज्य के विनाश के द्वार भी खोल देते हैं। अतः परिवार को नष्ट करना उचित नहीं माना जा सकता।

5. **स्त्री पुरुष समान होकर भी असमान है** –

अरस्तु कहता है कि प्लेटो का साम्यवाद स्त्रियों को अपने स्वाभाविक कार्य से वंचित कर उन्हें संरक्षक के रूप में पुरुषीय जीवन जीने के लिए बाध्य करने वाला है। औचित्यत की दृष्टि से इसे कभी सही नहीं माना जा सकता। एक स्त्री स्त्रियोंचित काम करके ही प्रसन्नता का अनुभव कर सकती है। अपने नैसर्गिक चरित्र के विपरीत कार्य करके न तो वह प्रसन्नता का और न आत्म संतुष्टि का अनुभव कर सकती है। लिंग के अतिरिक्त उनमें अन्य भेद भी हैं जिन्हें देखने समझने में प्लेटो असमर्थ रहा जो उसके संपूर्ण चरित्र को प्रभावित करते हैं।

6. **नैतिक पक्ष की अवहेलना** –

अरस्तु आलोचना करते हुए कहता है कि परिवार सिर्फ एक भौतिक संस्था ही नहीं एक नैतिक भी है। उसमें सिर्फ बच्चों का भौतिक दृष्टि से पालन पोषण ही नहीं होता वरन् नैतिक दृष्टि से उसका चरित्र निर्माण भी होता है। उसी में रहकर वह प्रारंभिक रूप से सहिष्णुता, स्नेहा, त्याग, संयम आदि का पाठ पढ़ता है। प्लेटो परिवार के इस पक्ष की अवहेलना करता है। परिवार एक व्यक्ति के लिए सद्गुणो की पहली पाठशाला है। अतः परिवार के संबंध में प्लेटो की अवधारणा सही नहीं है।

निष्कर्ष—

उपर्युक्त विस्तृत अध्ययन के पश्चात निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि प्लेटो प्राचीन यूनान के ही नहीं बल्कि समूचे विश्व के प्रथम महान दार्शनिक है। प्लेटो के विचारों ने शताब्दियों तक पाश्चात्य जगत को प्रभावित किया और आज भी उनके विचार प्रेरणा के स्त्रोत हैं। उन्होंने अनेक ग्रंथों पुस्तकों की रचनाएं की है, जिसमें से प्लेटो की सर्वोत्तम रचना रिपब्लिक रही है। प्लेटो ने व्यक्ति के तीन प्रमुख गुणो तृष्णा, शौर्य तथा विवेक को ही श्रेष्ठ और साधन माना है। उन्होंने अपने समय में कई सिद्धांतों का भी प्रतिपादन किया जिसकी हमने विस्तृत रूप से इस लेख के माध्यम से अध्ययन भी किया है। प्लेटो के न्याय सिद्धांत की अगर हम बात करें तो प्लेटो का न्याय सिद्धांत श्रम विभाजन, विशेषज्ञता और कार्यकुशलता की ओर ले जाता है। उसकी न्याय की धारणा में एक सामाजिक अच्छाई, एक निजी और सार्वजनिक नैतिकता और नैतिक निर्देश निहित है। फिर भी प्लेटो का न्याय सिद्धांत इस अर्थ में एकदली है क्योंकि वह व्यक्ति को सत्ता के अधीन रखता है। उसके इस सिद्धांत की बहुत से विचारको ने आलोचना भी की है। आदर्श राज्य के सिद्धांत की अगर हम बात करें तो प्लेटो के आदर्श राज्य की अवधारणा कि आलोचनाएं यद्यपि कुछ सत्यांश लिए हुए हैं लेकिन अपनी पूर्णतया में वे अतिशयोक्तिपूर्ण है। प्लेटो का दार्शनिक शासन यद्यपि विधि मुक्त है लेकिन निरंकुश नहीं क्योंकि उसे मर्यादा में रहकर ही शासन संचालन करना है। प्लेटो का आदर्श राज्य अनेक आलोचनाओं का शिकार हुआ है। उसे कल्पनालोक की वस्तु मानकर प्लेटो को पलायनवादी भी कहा गया है, परंतु इन आलोचनाओं के बाद भी प्लेटो के आदर्श राज्य का इतिहास पर उतना ही प्रभाव पड़ा है जितना स्पार्टा के वास्तविक राज्य का। मध्ययुग के पादरियों ने प्लेटो द्वारा बताए गए मार्ग पर चलते हुए स्वयं को आदर्श के ढांचे में ढालने का प्रयास किया। प्लेटो का आदर्श राज्य का सिद्धांत आदर्शवादियों के लिए एक प्रेरणा का स्त्रोत रहा है। यह वह आदर्श है जो मौजूद राज्यों को अपना व्यक्तित्व ऊंचा उठाने की प्रेरणा देता है। अतः प्लेटो का आदर्श राज्य राजनीतिक चिंतन के इतिहास में एक अमूल्य देन है। उसकी शिक्षा व्यवस्था आधुनिक युग में स्वीकार्य नहीं है परंतु इस बात को भी मानने से इनकार नहीं किया जा सकता है कि उसकी मानसिक रोगों के मानसिक उपचार की अवधारणा आज भी उतनी ही सत्य है जितनी प्लेटो के समय में थी। प्लेटो के सिद्धांत की अनेक आलोचनाओं के बाद भी उसका बहुत महत्व है। प्लेटो ने अपने समय में स्त्रियों की शिक्षा, उनकी दशाओं को सुधारने व स्त्रियों- पुरुषों की समानता पर जोर दिया था। आधुनिक युग में भी स्त्रियों की शिक्षा पर जोर दिया जा रहा है यह प्लेटों की ही देन है। आज विश्व के अनेक देशों में खराब साहित्य पर राज्य रोक लगाता है। प्लेटो की एक और सिद्धांत साम्यवाद का सिद्धांत है जिसका अध्ययन भी किया जिसमें उन्होंने साम्यवाद के दो रूप बताएं हैं एक संपत्ति का साम्यवाद और दूसरा पत्नियों का साम्यवाद। प्लेटो के साम्यवाद का मुख्य उद्देश्य अभिभावक वर्ग को संपत्ति व पारिवारिक मोह से दूर रखना है ताकि राज्य में सुरक्षा शांति बनी रहे। प्लेटो की इन सभी सिद्धांतों की अनेक विशेषताएं रही है साथ ही कुछ आलोचनाएं भी हुई है परंतु फिर भी पाश्चात्य राजनीतिक चिंतन में क्या कर सकते हैं। आधुनिक राजनीतिक चिंतन में प्लेटो की सिद्धांतों का अपना अलग ही महत्व है।

▪ संदर्भ ग्रंथ सूची—

1. पाश्चात्य राजनीतिक चिंतन – डॉ. बी. एल. फडिया।
2. पाश्चात्य राजनीतिक चिंतन – महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक।
3. राजनीति विज्ञान (प्रमुख राजनीतिक विचारक) - डॉ. पुखराज जैन।
4. प्रमुख राजनीतिक चिन्तक -डॉ. लक्ष्मीनारायण बैनीलाल।
5. पाश्चत्य राजनीतिक विचारक – डॉ. ओम प्रकाश गाबा।
6. समाचार पत्र पत्रिकाओं से प्राप्त जानकारी।
7. इंटरनेट के माध्यम से प्राप्त जानकारी—

- https://www.britannica.com/biography/Plato
- https://www.worldhistory.org/Plato/
- https://him.wikipedia.org
- https://jivani.org